REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 5 | FEBRUARY - 2018

सातवाहन साम्राज्य के आंतरिक व्यापारिक केन्द्र

मनोज कुमार
शोध-छात्र, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग,
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र।

सारांश

नगरों एवं व्यापारिक गतिविधियों का घनिष्ठ संबंध है। वस्तुतः नगरों का विकास और व्यापार की उन्नति एक-दूसरे पर आश्रित हैं। ग्रामों में उत्पन्न खाद्यान्नों का अधिशेष नगरों में बिक्री हेतु पहुँचता है। इसी भाँति विभिन्न क्षेत्रों में स्थित शिल्पों और उद्योगों की उत्पादित वस्तुओं को बेचने के लिए बाजार की आवश्यकता होती है। दैनिक उपभोग की छोटी-छोटी वस्तुओं से ऐश्वर्य और विलास-सामग्री की वस्तुओं तक आवश्यकतानुसार एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाने में नगरों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इस तरह नगर व्यापार वृद्धि में आवश्यक एवं महत्वपूर्ण केन्द्रों के रूप में कार्य करते हैं। दूसरी ओर नगरों के विकास में व्यापार एवं उद्योग की अनिवार्यता देखी जा सकती है। सातवाहन साम्राज्य के अन्तर्गत दक्षिणापथ का अधिकांश भाग शामिल था, जिसमें मुख्य रूप से वर्तमान महाराष्ट्र, कर्नाटक तथा आन्ध्र-प्रदेश का भू-भाग शामिल था। सातवाहन शासकों ने अपने राज्य में व्यापार-वाणिज्य की अनुकूल दशायें उत्पन्न कर न केवल व्यापारिक नगरों का विकास किया अपितु इन्हें जल तथा स्थल मार्गों से जोड़कर उत्तर तथा सुदूर दक्षिण भारत के आपसी आवागमन का माध्यम भी बनाया। प्रस्तुत शोध-पत्र में सातवाहन साम्राज्य के आंतरिक व्यापार केन्द्रों का अध्ययन अपेक्षित है ताकि सातवाहन काल के व्यापार-वाणिज्य की आंतरिक गतिविधियों का अवलोकन इनके माध्यम से किया जा सके।

शब्दार्थ: कोट-कीला, गन्धिक-सुगन्ध से संबंधित कार्य करने वाले व्यापारी; अभिलेख-प्रस्तर पर लिखित लेख, स्तूप-बौद्ध धर्मी ईमारत।

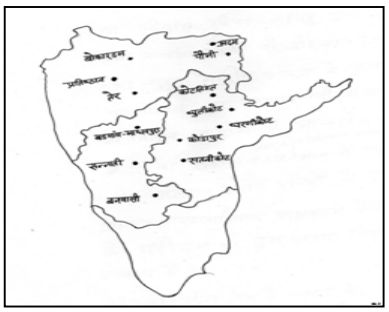

प्रस्तावना:

सातवाहन साम्राज्य के आन्तरिक व्यापार केन्द्रों का अध्ययन तत्कालिक सातवाहन साम्राज्य के वर्तमान में उपस्थित तीन अलग-अलग राज्यों के अन्तर्गत उपलब्ध पुरातात्त्विक

सातवाहन स्थलों के परीक्षण से इस प्रकार किया जा सकता है:-

(अ) आंध्र-प्रदेश क्षेत्र के व्यापारिक केन्द्र

(ब) महाराष्ट्र क्षेत्र के व्यापारिक केन्द्र

(स) कर्नाटक क्षेत्र के व्यापारिक केन्द्र

मानचित्र: सातवाहन साम्राज्य के आन्तरिक व्यापारिक केन्द्र (200 ई.पू.-200 ई.)

सौजन्य : अजय मित्र शास्त्री

(अ) आन्ध्र क्षेत्र के व्यापारिक केन्द्र:-

आन्ध्र क्षेत्र के साम्राज्य को रामचन्द्र मुरथी ने सातवाहन या आन्ध्र-सातवाहन साम्राज्य कहा है जोकि ईसा पूर्व की दूसरी शताब्दी के अंतिम दशक से ईस्वी सन की दूसरी शताब्दी तक सत्ता में बना रहा।[1] इसलिए कहा जा सकता है कि सातवाहन शासकों के अधीन शासित क्षेत्र सर्वप्रथम आंध्र क्षेत्र ही था। अत: आशा की जा सकती है इसी क्षेत्र में उनके प्रारंभिक व्यापार केन्द्र भी रहे होंगे। इनका परिचय निम्नलिखित रूप से किया जा सकता है:-

1.धरणीकोट:- इस नगर की पहचान अमरावती के साथ की जाती है। यह नगर आन्ध्र-प्रदेश के गुन्टुर जिले में कृष्णा नदी पर अवस्थित है। सातवाहन काल में व्यापारियों, महाजनों व कोषाध्यक्षों ने इस नगर के व्यावसायिक महत्व को ध्यान में रखकर बड़ी संख्या में यहां अभिलेख लिखवाये।[2] धरणीकोट को धान्यकटक भी कहा गया है।

धान्यकटक नगर विभिन्न व्यापारिक मार्गों से जुड़ा हुआ था। कार्ले-अभिलेख से पता चलता है कि दूसरी शताब्दी ई. में कल्याण के स्थान पर धान्यकटक एक महत्वपूर्ण व्यापारिक केन्द्र बन

1. N.S.Ramchandra Murthy-'Forts in Ancient India', JAHRS, XXXV, 1975-76, p. 314
2. बर्गेस-ए.एस.एस.आई, भाग-1 पृ. 100, फलक-56

गया था। इस लेख के अनुसार छः गन्धिक यूनानी सौदागर, यहाँ से गन्धद्रवों को स्वदेश ले जाते थे। रोम में भी इन पदार्थों की बड़ी माँग थी।[3]

अमरावती अर्थात् धान्यकटक की बौद्ध कला पर ग्रीको-रोमन प्रभाव परिलक्षित होता है जो अपने आप में आपसी व्यापार वाणिज्य का संकेत प्रस्तुत करते हैं। अमरावती स्तूप के निर्माण ईसा पूर्व की दूसरी शताब्दी से ईस्वी सन की द्वितीय शताब्दी के बीच हुआ है।[4] इस समय सातवाहन वंश अपनी चरम प्रतिष्ठा पर था।

धान्यकटक एक राजधानी तथा बाजार केन्द्र था तथा आन्ध्रप्रदेश की गोदावरी व कृष्णा नदी के क्षेत्र में पड़ता था। इस प्रकार यह नदियों द्वारा जलमार्ग से तथा सड़कों द्वारा स्थलमार्ग से दूसरे नगरों से जुड़ा हुआ था।[5] नागार्जुनीकोंडा तथा जग्गयपेट अभिलेख से पता चलता है कि धान्यकटक 300 ई. तक सातवाहनों के अधीन रहने के बाद इक्ष्वाकुओं का राजधानी नगर बना।[6] सातवाहनकाल में यह नगर कलाकारों तथा व्यापारियों का केन्द्र बना रहा।[7] विभिन्न बौद्ध स्थलों के उत्खनन से पता चलता है कि धान्यकटक चारों और से मुख्य मार्गों से जुड़ा हुआ था। कलिंग, द्रविड़, कर्नाटक, महाराष्ट्र तथा कोसल को जोड़ने वाले मार्ग के केन्द्र में अवस्थित होने के कारण, यह स्थान कला तथा व्यापार के केन्द्र के रूप में भी उभर कर सामने आया।[8]

(2)सतनीकोटः- सातवाहन काल का यह व्यापार केन्द्र आंध्र क्षेत्र में तुंगभद्रा नदी के किनारे अवस्थित था, जोकि वर्तमान कुर्नूल जिले में आता है।[9] सतनीकोट नाम में कोट से अभिप्राय किले या दुर्ग से लगाया जा सकता है। अर्थात् सातवाहन काल में यह केन्द्र एक किले के रूप में स्थापित था। 1977-80 के बीच उत्खनन से यहाँ तीन संस्कृतियों के अवशेष प्राप्त हुए हैं। उत्खनित स्तरीकरण में द्वितीय संस्कृति के काल में सुरक्षा दीवार के प्रमाण मिले हैं। घोष के अनुसार यहाँ से ''कुमार श्री शत'' का ब्रह्मी में अंकित प्रथम शताब्दी ई. का एक शीशे का एकमात्र सिक्का प्राप्त हुआ है।[10] यहां से प्राप्त प्रमाणों से पता चलता है कि संस्कृति का यह द्वितीय चरण प्रथम शताब्दी ई.पू. के मध्य से तीसरी शताब्दी ई. तक चलता रहा।'' घोष तथा शास्त्री के अनुसार कुमार श्री शत शतकर्णि-1 (27-17 ई.पू.) का पुत्र तथा उत्तराधिकारी था तथा प्रथम शताब्दी ई. में यहाँ शासन कर रहा था।[11] किसी दुर्गीकृत स्थल का व्यापार-वाणिज्य का केन्द्र होना अवश्यभावी लक्षण है।

---

3. मोतीचन्द्र-सार्थवाह, पृ. 103
4. डी. बैरेट : 'अमरावती स्कल्प्चर्स इन दि ब्रिटिश म्यूजियम', (लंदन, 1954) पृ. 40 तथा आगे
5. Haripada Chakraborti : Trade and Commerce of Ancient India, p. 205
6. लूडर्स संख्या - 1202-04
7. मैमोरीज ऑफ ए.एस.आई.संख्या, 71, 1938 (टी.एन. : रामाचंद्र)
8. जे.आर.ए.एस., 1901, पृ. 548
9. N.C.Ghosh, Excavation at Satanikota 1977-80, MASI No. 82, New Delhi, 1986, p. 8. Fig. 2 Pl.I; Nagpur Times, Dt. May 3, 1981
10. N.C.Ghosh, Op.cit, p. 78
11. Ibid

(3)धुलीकोट:- सातवाहन काल का धुलीकोट व्यापार केन्द्र वर्तमान करीमनगर जिले में अवस्थित है। इसके नाम में शामिल कोट शब्द का अर्थ दुर्ग समझा जा सकता है।[12] उत्खनन से प्राप्त अवशेषों के अनुसार यह पर ग्यारह मीटर ऊंची दीवार के प्रमाण मिले हैं जोकि सुरक्षा दीवार होने के संकेत देती है।[13] अवशेषों की पहचान सातवाहन कालीन होने की, की गई है। धुलीकट, करीमनगर की तरफ से आने वाले मार्ग पर अवस्थित है जो आगे पेडांबकुर तथा कोटिलिंगल की दिशा में उत्तर पूर्व की ओर जाता है। व्यापार मार्ग पर अवस्थिति तथा इसका दुर्गीकरण इसे सातवाहन काल का व्यापार केन्द्र साबित करने के लिए पर्याप्त प्रमाण हैं।[14] इसके अतिरिक्त प्राप्त ईटें तथा मृदभाण्ड भी इसे इसी काल का स्थल घोषित करते हैं।[15]

(4)कोटलिंगल:-सातवाहन काल का यह नगर गोदावरी जिले के पेड्डापल्ली तालुक में, करीमनगर जिला केन्द्र से 65 कि.मी. उत्तर में अवस्थित है। प्रारंभिक ऐतिहासिक काल से संबंधित यहां 6 मीटर ऊंचा टीला प्राप्त होता है जो कि 50 हेक्टेयर क्षेत्र में फैला है। यह गोदावरी के तट से 300 मीटर की दूरी पर ही स्थित है। इस स्थान से सातवाहन वहां के संस्थापक सिमुक के सिक्के प्राप्त हुए हैं।[16] इस स्थान से प्राप्त अवशेष गाथासप्तशती से प्राप्त गोदावरी का यातायात के रूप में विवरण तथा प्राचीन राजमार्ग पर कोटलिंगल की अवस्थिति इसे सातवाहनकालीन व्यापार केन्द्र साबित करता है।[17]

(5)कोंडापुर:- कोंडापुर, आंध्र-प्रदेश के मेढ़क जिले के कालाबगुर तालुका में हैदराबाद से 43 मील पश्चिम-उत्तर-पश्चिम में अवस्थित है। यहाँ से प्राप्त टीला समुद्र तल से 1788 फीट तथा अपने आस-पास के भू-भाग से 20 से 30 फीट ऊँचाई पर उपस्थित है जोकि 84 एकड़ में फैला हुआ है। कोंडापुर की व्यापारिक महत्ता इसी से आंकी जा सकती है कि मेगस्थनीज ने जिन 30 दुर्गों का वर्णन किया है उनमें दक्षिण भारत का एक महत्वपूर्ण दुर्ग कोंडापुर बताया गया है।[18]

आन्ध्र प्रदेश के उपरोक्त स्थलों का वर्णन करने के उपरांत कहा जा सकता है कि यहां पर सातवाहन काल के प्रारंभक से ही व्यापारिक केन्द्रों का काफी विस्तार रहा है जो सम्पूर्ण सातवाहन काल में और उसके उपरांत भी बने रहे।

(ब) महाराष्ट्र क्षेत्र के व्यापार केन्द्र:

12. Ibid, p. 81
13. D.P.Singh-Defensive Art of India, Delhi, 1987, p. 60
14. Dilip K.Chakaraborti – The Archaeology of the Decean Routes, P. 56
15. V.V. Krishan Shastri – The Proto and early historical cultures of Andhra Pradesh, Hyderabad, 1983, p. 124
16. V.V. Krishan Shastri – op.cit., p. 126
17. Ibid
18. Ajay Mitra Shastri-The Age of the Satavahanas, p. 429

सातवाहन काल में महाराष्ट्र क्षेत्र में अनेक व्यापार केन्द्र उपस्थित थे। पुरातात्विक उत्खननों से पता चला है कि 'दुर्गों के राज्य राजस्थान' से भी अधिक नियोजित रूप से बसे हुए शहर महाराष्ट्र में बहुत अधिक थे।[19] महाराष्ट्र क्षेत्र के क्षैतिज अन्वेषण से पता चलता है कि यहाँ प्रतिष्ठान, पुनानी, पोन्नार, कौंडिन्यपुर, नेवासा, नासिक, अदम तथा तगर जैसे अनेक व्यापारिक केंद्र थे। इन स्थलों के लम्बवत उत्खनन तथा साहित्यिक साक्ष्यों के वर्णन से पता चलता है कि सातवाहन काल में पूरी तरह से समृद्ध नगर थे। इस दृष्टि से इन सभी का वर्णन निम्नलिखित रूप से किया जा सकता है:-

(I) प्रतिष्ठान (पैठन):- प्रतिष्ठान दक्कन का सबसे प्राचीन नगर था।[20] पीतलखोरा स्तंभ लेख में वर्णन मिलता है कि गंधिकों के एक परिवार ने जिसका मुखिया मित्रदेव था, भारी मात्रा में दान दिया था। दूसरी शताब्दी ई. पूर्व के इस स्तंभलेख में मित्रदेव को पैठन का निवासी बताया गया है।[21] इस प्रमाण से प्रतिष्ठान नगर की प्राचीनता का पता चलता है। प्रतिष्ठान प्रथम शताब्दी ई. में सातवाहनों की राजधानी थी। यह नगर दक्षिण के औरंगाबाद जिले में गोदावरी नदी के उत्तरी किनारे पर अवस्थित था।[22] अभिलेखों व सिक्कों से पता चलता है कि पुलुमावि नाम के शासक ने कृष्णा-गोदावरी क्षेत्र और महाराष्ट्र में शासन किया था। प्रतिष्ठान से उज्जैन और विदिशा होकर पाटलिपुत्र के रास्ते के लिए ताप्ती व नर्मदा नदी पार करनी पड़ती थी।[23]

पेरिप्लस के अनुसार प्रतिष्ठान सूती वस्त्र उद्योग का महत्त्वपूर्ण नगर और विस्तृत व्यापार का प्रसिद्ध केन्द्र था। यह केन्द्र बेरीगाजा (भरूकच्छ) के दक्षिण में 20 दिनों की यात्रा की दूरी पर स्थित था।[24] यहाँ से बड़ी मात्रा में लोहितांक और वस्त्र भरूकच्छ की बंदरगाह पर पहुँचाया जाता था। यह नगर सुगन्धित पदार्थों के निर्यात का केन्द्र था जो मुख्य रूप से पश्चिम देश मिस्र तथा रोम को भेजा जाता था।[25]

2. तगर:- प्राचीन काल में तगर दक्षिण भारत का एक महत्त्वपूर्ण नगर था। तगर एक अन्तर्देशीय व्यावसायिक केन्द्र था, जहाँ से भरूकच्छ की बन्दरगाह से व्यापार होता था। दक्षिणी भारत के दक्कन क्षेत्र में सूती वस्त्र उद्योग अपने आप में एक प्रमुख उद्योग था। तगर इस सूती वस्त्र उद्योग का एक प्रमुख नगर था।[26] पेरिप्लस के अनुसार प्रतिष्ठान से पूर्व की ओर दस दिन की यात्रा करने के बाद एक प्रमुख नगर तगर आता है।[27] फ्लीट ने इस क्षेत्र के प्रारंभिक व्यापारिक रास्तों के बारे में बताया है। दो रास्ते, एक मसुलिपट्म और दूसरा

---

19. R.S. Khangarot and P.S. Nathawot, Jaigarh : The Invincible Fort of Amber, Jaipur, 1990, p. 4
20. इम्पिरियल गजेटियर, XIX. 317
21. लूडर्स संख्या - 1187
22. हरिपद चक्रवर्ती-पूर्वोक्त, पृ. 200
23. ई.जे. रैप्सन-क्वायन्स ऑफ आन्ध्रा डायनेक्टी, पृ. 22
24. पेरिप्लस, पृ. 51
25. प्रकाशचरण प्रसाद-फॉरेन ट्रेड एण्ड कॉमर्स इन एंशियट इण्डिया, पृ. 79
26. ए.एस. अल्तेकर-इण्डियन हिस्ट्री कांग्रेस, 1951, पृ. 28
27. पेरिप्लस, पृ. 51

विनुकोण्डा से शुरू होकर हैदराबाद के 25 मील दक्षिण-पूर्व में मिलते थे, यहाँ से यह रास्ता तगर प्रतिष्ठान और दौलताबाद से होते हुआ मारकिंड (अजन्ता की पहाड़ियां) पहुँचता था, यहाँ से यह दक्षिण के नानाघाट को पार करता हुआ भरूकच्छ व कल्याण की बंदरगाह पर पहुँचता था।[28] पेरिप्लस के अनुसार अधिकतर समुद्री कस्बे, मुख्य रूप से भरूकच्छ व्यावसायिक रूप से भीतरी कस्बों, तगर और प्रतिष्ठान से जुड़े हुए थे।[29]

तगर के व्यापारी कल्याण व सोपारा की बंदरगाहों के नजदीक होते हुए भी अपनी वस्तुऐं भरूकच्छ की बंदरगाह पर पहुँचाते थे। इसका कारण पेरिप्लस ने यह बताया है कि उस समय शक शासकों ने इन दोनों बंदरगाहों को बंद कर दिया था।[30] पेरिप्लस के अनुसार तगर के वस्त्र उद्योग में विभिन्न प्रकार के सूती वस्त्र तथा मलमल तैयार होती थी। इन वस्त्रों के अलावा यहाँ से बड़े पैमाने पर लोहितांक भरूकच्छ की बन्दरगाह पर पहुँचाए जाते थे। यहाँ से भेजे गये साधारण वस्त्रों, मलमल व लोहितांक का पश्चिमी देशों को निर्यात किया जाता था।[31]

(3) पौनी:- सातवाहन काल का यह व्यापार केन्द्र महाराष्ट्र राज्य के भंडारा जिले में वेनगंगा नदी के दाहिने तट पर अवस्थित है। यह नागपुर से 82 कि.मी. दक्षिण पूर्व में है। यहां पर निर्माण संरचना के जो अवशेष प्राप्त हुए हैं उससे यह एक मजबूत किलानुमा स्थान प्रतीत होता है।[32] उत्खनन से पाँच चरणों का स्तरीकरण मिलता है, जिसमें से बसावट का चतुर्थ स्तर सातवाहन काल के समकालीन ठहरता है।[33] पौनी, बालाघाट से आने वाले मुख्यमार्ग पर अवस्थित था जो आगे चलकर दक्षिणापथ से जुड़ता था और उत्तर में जबलपुर तक पहुंचता था।[34] इस प्रकार यह स्थल सातवाहन काल में भारत के आंतरिक व्यापार में दक्षिणापथ से होने वाले व्यापार की प्रक्रियाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता था।

(4)अदम:-महाराष्ट्र के नागपुर जिले में अवस्थित अदम, सातवाहन काल में एक महत्त्वपूर्ण व्यापार केन्द्र था। वेणगंगा के किनारे आज भी आठ मीटर ऊँचा टीला, इसके समृद्ध इतिहास की गाथा सुनाता है। यहाँ पर की गई खुदाई से पाँचवे स्तर पर सातवाहन काल के प्रमाण मिलते है।[35]

अदम से अनेक सातवाहन शासकों के सिक्के प्राप्त हुए हैं जैसे शातकर्णि-1, पुलुमावि, यज्ञश्री तथा स्कन्दश्री आदि।[36] यहां से प्राप्त सबसे चमत्कारिक वस्तु, सातवाहन शासकों के चित्रों से युक्त सीसे के सिक्के हैं।[37] इन सभी 86 सीसे के सिक्कों से सातवाहनों के पांच

---

28. जर्नल ऑफ दि रॉयल एशियाटिक सोसायटी, 1901, पृ. 537
29. पेरिप्लस, पृ. 51
30. हरिपद चक्रवती-पूर्वोक्त, पृ. 202
31. पेरिप्लस, 51
32. S.B. Deo and J.P. Joshi-Paunar Excavation (1969-70), Nagpur, 1972, p. 5
33. Ibid.
34. Dilip K. Chakraborti – op.cit., p. 58
35. Amarendra Nath- "Adam an index to Vidarbha Archaeology, pp. 69-79
36. Amarendra Nath- "A lead issue of Siva-Skanda Satakarni", N.S. Vol. I, pp 59-61
37. Amarendra Nath- "The First ever reported lead portrait coins of the Satavahanas," Nidhi, Vol. I, 1990, pp 25-30.

शासकों की पहचान की गई है। ये सिक्के चांदी के सिक्कों के स्थान पर चलाये गये थे। यहां चांदी का कोई सिक्का नहीं मिलता। यहां से प्राप्त सिक्कों से सम्बंधित एक अन्य महत्त्वपूर्ण तथ्य यह है कि यहां महारठी प्रकार के एक हजार सिक्के प्राप्त हुए है। महारठी क्षेत्र को विजय शातकर्णि ने विजित किया था।[38] स्वदेशी सिक्कों के अलावा यहाँ रोमन सिक्के भी प्राप्त हुए हैं जिनमें चार चांदी[39] के तथा ग्यारह सोने[40] के सिक्के हैं। ये सभी विदेशी सिक्के चित्रित हैं। अदम में सिक्के ढ़ालने की टकसाल[41] का भी पता चला है।

अदम से लगभग 70 मुहरें भी मिली है जिन पर उज्जैयिनी चिन्ह बना हुआ है तथा झुके हुए बैल की एक आकृति छपी है।[42] शायद यह अदम क्षेत्र की स्थानीय पहचान की मुहर थी। सातवाहन काल में कुछ विरले ही केन्द्र थे जिन्हें अपनी पहचान की मुहर रखने का अधिकार था।

इसके अतिरिक्त अदम के पुरातात्विक स्थल में सोने, चांदी, कार्नेलियन, लोहे, सीसे तथा महंगे मोतियों के अनेक साक्ष्य मिले हैं।[43] मृदभाण्ड़ों के साक्ष्य भी समृद्ध शैली के बने हुए प्राप्त होते हैं। इन सब कारणों से इस स्थल को एक व्यापार केन्द्र माना जा सकता है क्योंकि यहां एक बड़े शहर की संस्कृति के सारे गुण देखे जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त विदर्भ क्षेत्र के पौनी, पोन्नार तथा कौन्डिन्यपुर की श्रृंखला को अदम के बिना पूरा नहीं किया जा सकता क्योंकि इसी स्थान से होकर दक्षिणापथ दक्षिणी राज्यों की तरफ आगे बढ़ता था।

(स) कर्नाटक क्षेत्र के व्यापारिक केन्द्र:-

मौर्य साम्राज्य के पतन के बाद सातवाहन शासकों ने जो साम्राज्य विस्तार किया उसमें कर्नाटक क्षेत्र भी शामिल था। अत: यह स्वाभाविक है कि इस क्षेत्र में भी इस काल से सम्बन्धित व्यापार केन्द्र रहे होंगे। यहां से प्राप्त अनेक स्थलों में कुछ का वर्णन इस प्रकार हैं, जो व्यापारिक दृष्टि से अति महत्वपूर्ण रहे हैं:-

1.बनवासी:- जब सातवाहन शासक प्रतिष्ठान में सत्ता स्थापित किये हुए थे, उसी समय कर्नाटक के वर्तमान कन्नड़ जिले के उत्तर में अवस्थित बनवासी को दूसरी राजधानी का दर्जा देकर उसे एक व्यापार केन्द्र बनाया हुआ था। सातवाहन शासकों के समय इसे चुटुस कहा जाता था तथा यह इनकी आर्थिक राजधानी थी। इस स्थल से प्रथम शताब्दी ई.पू. से दूसरी शताब्दी ई. के

---

38. Ajay Mitra Shastri – op.cit., p. 461
39. Amarendra Nath-"Raman Coins and Bullae from Adam", Vol. IV, 1994, Oriental Numismatic Studies Vol. I, pp. 91-97
40. K.D. Kawadkar-JNSI, 34. Pt. 2, 1972, pp 243-47
41. Amarendra Nath- "Coins mould from Adam", JNSI, Vol. 43
42. Krishna Deva- "Coins devices on Rajghats seals" JNSI, 1941, pp 73-74
43. P.R.K. Prasad in Supra No. 20

पर्याप्त प्रमाण मिलते है। यह स्थल 100 हेक्टेयर में फैला है तथा इसकी सुरक्षा दीवार के अभी भी प्रमाण मिलते हैं।[44]

2.सन्नाती:- यह स्थान कर्नाटक राज्य के गुलबर्ग जिले के चितापुर-तालुका में अवस्थित है। यह भीमा नदी के पृष्ठभाग में होने के कारण पश्चिम, दक्षिण तथा पूर्व की तरफ से पूरी तरह से उसके द्वारा सुरक्षित है। सुरक्षा-चक्र पूरा करने के लिए उसके उत्तर में दो मजबूत दीवार निकाली गई थी। ये दीवारें एक दूसरी के समानान्तर अर्धचंद्राकार रूप में बनाई गई हैं। इतनी भारी सुरक्षा का आंकलन करते हुए जोशी जी ने इसे व्यापार-वाणिज्य का एक महत्त्वपूर्ण केन्द्र माना है। यह कांची तथा प्रतिष्ठान को जोड़ने वाले मार्ग पर अवस्थित था।[45]

3.बड़गांव-माधवपुरा:-कर्नाटक राज्य में यह स्थल बेलगांव का उपनगरीय क्षेत्र है। यहां से सातवाहन कालीन सरंचना का एक उमदा प्रमाण मिला है। इस कीलानुमा सरंचना के चारों ओर एक मजबूत सुरक्षादीवार के संकेत उपलब्ध हुए हैं।[46] इस स्थल की रिहायसी बनावट तथा सुरक्षा व्यवस्था से यह एक मजबूत व्यापारिक केन्द्र प्रतीत होता है।

उपरोक्त स्थलों के पुरातात्विक अध्ययन से पता चलता है कि सातवाहन काल में व्यापार वाणिज्य के केन्द्र न केवल राज्य के संपूर्ण आंतरिक भागों में बिखरे हुए थे बल्कि उन्हें अपने महत्व के अनुसार सुरक्षा भी उपलब्ध करवाई गई थी। परिणामस्वरूप उद्योग तथा व्यापार इस काल में अपने चरम पर रहा।[47]

---

44. S.K.Joshi-Defence Architecture in Early Karnataka, Delhi, 1985, p. 45.

45. Ibid. p. 130 Fig. 15, 16 and 89

46. A. Sundara-A Two Thousand Years Old town and its architecture in Vadagaon-Madhavapura, Belgaun in Karnataka Madhu : Recent Researches in Indian Archaeology and Art History, Delhi, 1981, pp 87-98

47. Ajay Mitra Shastri – op.cit., p. 439